* U A - 0 1 1 0 *

UA-0110

Third Year B. A. Examination

February/March – 2012

Hindi : Paper - I

(प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी काव्य)

Time : **3** Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **T. Y. B. A.**

Name of the Subject :

☛ **HINDI : PAPER - 1**

☛ Subject Code No. : **0 1 1 0** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) दाहिनी ओर प्रश्नों के अंक रखे हैं।

१ एक मानवतावादी संत कवि के रूप में कबीर का मूल्यांकन कीजिए। १४

अथवा

१ काव्य कला की दृष्टि से मीराँबाई की कविता की समीक्षा कीजिए। १४

२ 'नागमती वियोग खंड की विशेषताएँ बताइए। १४

अथवा

२ 'नागमती वियोग खंड' के आधार पर जायसी के ऋतु वर्णन पर प्रकाश डालिए। १४

३ ''सूरदास का 'भ्रमरगीत' विरह का उमडता हुआ सागर है''। पठित पदों के आधार पर सिद्ध कीजिए। १४

अथवा

३ नागमती वियोग खंड के आधार पर नागमती का चरित्रांकन कीजिए। १४

४ टिप्पणियाँ लिखिए– १४

(अ) बिहारी की भाषा – शैली

अथवा

तुलसीदास के राम

(ब) जायसी की अलंकार योजना

अथवा

जायसी का प्रेम – निरूपण

५ ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए – १४

(अ) ''ऐसो को उदार जग मांही।
बिनु सेवा जो द्रवे दीन पर राम सरिस कोउ नांही।।
जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावन मुनि ज्ञानी।।
सो गति देत गीध सबरी कहं प्रभु न बहुत जिय जानी॥
जो संपति दससीस अरपि करि रावन सिव यहं लीन्ही॥
सो संपदा बिभीषन अहं अति सकुच सहित हरि दीन्ही।''

अथवा

(अ) ''मांइ साँवरे रंग राची॥
साज सिंगार बाँध पग घूंघरु, लोक लाज तन नाची।
गायाँ कुमत लर्यां साधाँ संगत श्याम प्रीत जग साँची॥
गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल ब्याल री बाँची।
श्याम बिणा जग खाराँ लागाँ, जगरी वाताँ काँची।''

(ब) पिउ वियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा निति बोले पिउ पिउ॥
अधिक काम दाधै सो राम। हरि लेइ सुवाढाएउ पिउ नामा॥
बिरह बानतस लाग न डोली। रक्त पसीज, भीजि गइ चोली॥
सूखा हिया, हार भा भारी। हरे – हरे प्रान तजहि सब नारी॥
खन एक आव पेट महँ। साँसा खनहिं जाइ जिउ होइ निराला॥

अथवा

(ब) कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नांही।
सीस उतारै हाथ सों, तब पैठे घर मांही॥
प्रेम न बारी उपजै, प्रेम न हाट बिकाइ।
राजा परजा जिहिं रूचे, सिर देई लै जाइ॥

अथवा

कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेसु लजात।
कहि है सबु तेरो हियो, मेरे हिय की बात॥
गिरि तें ऊँचे रसिक – मन बूडे जहाँ हजारू।
वहै सदा पसु – नरनु को, प्रेम पयोधि पगारू॥